अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय पृष्ठ

प्रथम अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का कथावस्तुगत अध्ययन " 1 - 22

1.1 मुख्य कथा
1.2 गौण कथाएँ
1.3 कथागत बिखराव
1.4 अलग विषयों को तलाशनेवाली कथाएँ
1.5 कथागत प्रयोग
समन्वित निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के पात्र एवं उनके चरित्र - चित्रण का अध्ययन " 23 - 52

2.1 पुरूष पात्र
2.2 नारी पात्र
2.3 गौण पात्र
2.4 पात्रों का बाहुल्य
2.5 पात्रों के चरित्र - चित्रण में आधुनिकता
2.6 परिवेशानुकूल पात्र संरचना
समन्वित निष्कर्ष

तृतीय अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के संवादों (कथोपकथन) का अध्ययन " 53 - 73

3.1 संवादो में नई अवधारणाओं का प्रयोग
3.2 परिवेशानुकूल संवाद
3.3 आत्मकथनात्मक संवाद
3.4 प्रबोधनात्मक संवाद
3.5 पात्र परिचयात्मक संवाद
3.6 संवादों में प्रयोगशीलता
समन्वित निष्कर्ष

अध्याय पृष्ठ

चतुर्थ अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का परिवेशगत अध्ययन " 74 - 106

4.1 विवेच्य उपन्यास का परिवेश
4.2 बनती - बिगड़ती स्थितियों का वातावरण
4.3 स्वातंत्र्योत्तर जनसामान्य की स्थितियों का वातावरण
4.4 शोषणात्मक स्थितियाँ
4.5 उत्सव - पर्व - दुःखद पीड़ाओं का वातावरण
4.6 पात्रों का विस्थापन
4.7 ग्रामीण वातावरण
4.8 पहाडी भूभाग का वातावरण
4.9 अकालग्रस्त स्थितियों का वातावरण
4.10 हिन्दू - मुस्लिम संघर्ष का वातावरण
4.11 धर्मांतरण का वातावरण
समन्वित निष्कर्ष

पंचम अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की भाषा, शैली एवं उद्देश्य का अध्ययन " 107 - 130

भाषा :-
5.1 ग्रामीण बोलचाल की भाषा
5.2 परिनिष्ठित भाषा
5.3 चित्रात्मक भाषा
5.4 लोकगीतात्मक भाषा
5.5 बुंदेलखंडी भाषा
5.6 उर्दू - अरबी - फारसी शब्दों का प्रयोग
5.7 अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग
5.8 मुँहावरे, कहावतें एवं सुक्तियों का प्रयोग
5.9 भाषा में प्रयुक्त पुराने संदर्भों में आधुनिक युगबोध का प्रयोग
5.10 मिश्रित भाषा

शैली :-
5.2.1 संवादशैली
5.2.2 स्वगतशैली
5.2.3 पूर्वदीप्तिशैली
5.2.4 स्वप्नशैली
5.2.5 काव्यात्मक शैली
5.2.6 कथात्मक शैली

अध्याय पृष्ठ

5.2.7 आत्मकथात्मक शैली
5.2.8 व्यंग्यात्मक शैली

उद्देश्य :-

5.3.1 ग्रामीण जनजीवन की स्थिति का चित्रण करना।
5.3.2 पहाडी जनजीवन की स्थिति का चित्रण करना।
5.3.3 ग्रामीण जीवन में सांप्रदायिकता का चित्रण करना।
5.3.4 नारी - शोषण के विभिन्न आयामों को वाणी देना।
5.3.5 दलित - सवर्ण संघर्ष आदि को दिखाना।

समन्वित निष्कर्ष

उपसंहार 131 – 135

संदर्भ - ग्रंथ सूची 136 – 137